प्रस्तावना

वैश्वीकरण के इस युग में जनसंचार, प्रौद्योगिकी तथा द्रुतगामी यातायात के साधनों ने कभी बहुत बड़े लगने वाले संसार को बहुत छोटा कर दिया है। आज दुनियाँ भर के लोग एक दूसरे के करीब आने की कोशिश कर रहे हैं, एक दूसरे को समझने की कोशिश कर रहे हैं तथा एक दूसरे के विचारों, संस्कृतियों, साहित्य और दर्शन को जानने के साथ-साथ भाई चारा बनाने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसे में उन्हें ज़रूरत पड़ रही है एक दूसरे की भाषा सीखने की। इधर भारत एक नई आर्थिक ताकत के रूप में उभर रहा है। अत: हिंदी के प्रति अधिकांश देशों का रूझान बढ़ा है। हिंदी देश की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। इसलिए विविधता में एकता को व्यावहारिक रूप देने के लिए, परस्पर संपर्क स्थापित करने के लिए हिंदी का संपर्क-भाषा के रूप में अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। इस विशाल देश में अंतरप्रांतीय व्यवहार के लिए हिंदी समर्थ भाषा के रूप में अपनाई गयी है। यह अनुभव किया जा रहा है कि देश में एक भाषा के माध्यम से अपने विचारों तथा भावों, अपनी आवश्यकताओं तथा संवेदनाओं को प्रकट करने और भावात्मक एकता स्थापित करने की आवश्यकता है। इसके लिए हिंदी को ही अधिक उपयुक्त समझा गया है। इस प्रकार हिंदी भारतीय जन-मानस के संपर्क की भाषा है।

संस्कृत की परंपरा से विकसित यह भाषा भारतीय संस्कृति और सभ्यता का सच्चा प्रतिनिधित्व करती है। शताब्दियों से हमारे देश के संतों ने, धर्मगुरूओं ने हिंदी के माध्यम से अपना संदेश दिया। इस दृष्टि से हिंदी का परिवेश संपूर्ण देश में व्याप्त है। लगभग सभी लोग हिंदी को सुनकर समझने की क्षमता रखते हैं।

प्राचीन काल में एक से अधिक भाषाओं को जानना मनुष्य के लिए प्रतिष्ठा का विषय माना जाता था। परंतु साधनों एवं प्रेरणा के अभाव में अधिक व्यक्तियों की रूचि इस ओर नहीं थी। लेकिन आज स्थिति बदल गयी है। आज मनुष्य आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक कारणों से अन्य भाषाओं के अध्ययन में रूचि दिखा रहा है। इसी उद्देश्य से विदेशी छात्रों में हिंदी सीखने की रूचि बढ़ती नजर आ रही है। बढ़ती रूचि के कारण ही विदेशी विद्यार्थी भारत में हिंदी सीखने के लिए आ रहे हैं।

भाषा का शिक्षण वस्तुत: भाषाई कौशलों का शिक्षण है। भाषा को कौशल प्रधान विषय कहा गया है। भाषा सीखने और सिखाने का उद्देश्य मुख्यत: इन कौशलों की आदत विकसित करना है। मातृभाषा में बालक भाषा के प्रथम दो कौशलों-श्रवण, भाषण पर सहज रूप से अधिकार प्राप्त कर लेता है। औपचारिक शिक्षा के क्रम में वाचन तथा लेखन का अभ्यास कराया जाता है। लेकिन जब अन्य भाषा सीखते हैं तो उसमें चारों कौशलों का शिक्षण आवश्यक होता है। इस दृष्टि से कौशलों का महत्व स्पष्ट हो जाता है कि इन कौशलों के आधार पर ही भाषा व्यवहार की कुशलता का विकास

संभव है। भाषाई कौशलों के माध्यम से ही अन्य भाषा की सामाजिक संस्कृति से परिचित होते हैं। जब भी कोई विद्यार्थी नई भाषा सीखता है तो उसे इन चारों कौशलों में पारंगत होना अनिवार्य होता है।

मनुष्य के पास भाव प्रकट करने के तीन साधन हैं- संकेत के माध्यम से, बोलकर तथा लिखकर वह अपने हृदय के भाव प्रकट कर सकता है। उक्त तीनों साधन मनुष्य के बुद्धि-विकास का क्रम सूचित करते हैं। देखा जाए तो सबसे पुरानी लिखावट पत्थरों पर लिखी हुई कुछ बेतुकी, बेढ़ंगी रेखाएं भर ही हैं। मनुष्यों ने लिखने का प्रयत्न करना आरम्भ किया अर्थात् ध्वनि की प्रतीक रेखाओं का अविष्कार किया। अक्षरों में गोलाई, सुडौलपन आदि लाने का कोई साधन न था। किसी प्रकार उल्टी-सीधी रेखाएँ खींचकर वर्णमाला के अभाव की पूर्ति करने लगे। धीरे-धीरे आवश्यक उपकरण प्रस्तुत हुए और फलस्वरूप उन्हीं उल्टी-सीधी रेखाओं ने आज हमारी वर्णमला के सुंदर, सुडौल अक्षरों का रूप धारण किया और धीरे-धीरे आज लिखने पढ़ने का व्यापक प्रचार हो गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि लेखन-कौशल का भाषा-शिक्षण में अपना विशेष स्थान है।

लेखन कौशल का अर्थ है भाषा विशेष में स्वीकृत लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों को अंकित करने की कुशलता। सामान्यत: प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि व्यवस्था होती है। इन लिपि प्रतीकों को वे ही समझ सकते हैं जिन्हें उस भाषा की लिपि-व्यवस्था का ज्ञान है। इसका मतलब यह है कि लेखन द्वारा लिपिबद्ध विचारों तथा भावों को वे ही पढ़ और समझ सकते हैं जिन्हें उस भाषा तथा उसकी लिपि व्यवस्था की समुचित जानकारी है। स्पष्ट है कि लेखन लिपि प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति का साधन है।

भाषा की संरचना की जानकारी तथा शब्द-भंडार पर भी लेखन-कौशल निर्भर करता है। वाक्य-संरचना, वाक्य-बंध, अनुच्छेद-निर्माण इस कौशल को विकसित करने में सहायक सिद्ध होते हैं। भाव-प्रकाशन की क्षमता, बोलने के साथ "लिखने के अभ्यास" से विकसित होती है।

---

1. डॉ एस. आर. शर्मा, भाषा शिक्षण: पृष्ठ न. 51-52
2. डॉ कैलाशचन्द्र भाटिया, आधुनिक भाषा शिक्षण : पृष्ठ न. 14

0.1 शोध की परिकल्पना

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में विदेशी छात्र-छात्राओं के संपर्क में आने पर उनके द्वारा बोली जाने वाली हिंदी के प्रति मेरी उत्सुकता और जिज्ञासा ने मुझे शोध के प्रस्तुत विषय की ओर प्रेरित किया। कई देशों के विद्यार्थियों द्वारा हिंदी के कई रंग यहाँ दिखाई देते हैं। उनकी हिंदी में उनकी मातृभाषा का रंग झलकता है। अत: गुरूजनों से परामर्श के बाद विदेशी छात्र-छात्राओं द्वारा लिखित हिंदी में मिलने वाली अशुद्धियों को शोध विषय बनाने का निर्णय लिया गया।

0.2 शोध का महत्व

आज के समय की माँग को देखते हुए तथा व्यावहारिकता की दृष्टि से भाषा और भाषा शिक्षण की आवश्यकता साहित्य से ज्यादा है। भाषा अध्ययन और भाषा शिक्षण के क्षेत्र में आज रोज़गार की संभावनाएँ बढ़ रहीं हैं। शैक्षिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों में अलग से भाषा प्रौद्योगिकी पर काम हो रहे हैं तथा भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन के केंद्र खुल रहे हैं। इस समय विदेशी भाषा के रूप में हिंदी अध्ययन-अध्यापन, तत्संबंधी शोध तथा पाठ निर्माण का कार्य केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, जे. एन. यू. दिल्ली, दिल्ली वि.वि, बी. एच. यू. वाराणसी, पुणे, हैदराबाद आदि जगहों पर व्यवस्थित रूप से किया जा रहा है।

भाषा शिक्षण में पाठ निर्माण तथा शिक्षण विधि निर्धारण में व्यतिरेकी विश्लेषण, पाठ्य बिंदुओं, भाषा व्याघात तथा त्रुटि विश्लेषण का महत्व किसी से छुपा नहीं है। प्रभावशाली अध्यापन के लिए भाषा शिक्षक को यह जानना ज़रूरी है कि उसके विद्यार्थियों के लिए सीखी जाने वाली भाषा में कौन-कौन से शिक्षण बिंदु हैं। अर्थात कठिनाई पैदा करने वाले तत्व जो कि उच्चारण, लेखन और व्याकरण से संबंधित होते हैं। वह अपने शिक्षण में इन्हीं बिंदुओं पर ज़्यादा ध्यान देता है। व्यतिरेकी विश्लेषण द्वारा उसे दोनों भाषाओं की समानता-असमानता का पता चलता है तथा त्रुटि विश्लेषण द्वारा वह उनकी अशुद्धियों को उनके कारण सहित जानने की कोशिश करता है। इसके बाद शिक्षक सुधारात्मक अभ्यासों द्वारा उन गलतियों को दूर करने की कोशिश करता है।

प्रस्तुत शोध कार्य इसी दिशा में उठाया गया एक छोटा सा कदम है। इन विद्यार्थियों की लेखन में होने वाली अशुद्धियों का यहाँ कारण सहित विश्लेषण किया गया है। इससे हिंदी को विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाने वाले शिक्षकों तथा इस दिशा में शोध कार्य करने वाले शोधार्थियों को भी निश्चित रूप से मदद मिलेगी। इनके आधार पर इस प्रकार के विदेशी छात्रों के लिए पाठ तथा सुधारात्मक अभ्यासों का निर्माण करने में भी सहायता मिलेगी।

0.3 शोध की सीमाएँ

वैसे तो किसी भी भाषा-भाषी की अशुद्धियों का अध्ययन बहुत व्यापक विषय है। मौखिक और लिखित भाषा के उच्चारण, प्रयोग, व्याकरण तथा लेखन के कितने ही पक्षों को अध्ययन का केंद्र बनाया जा सकता है।

(क) मौखिक भाषा के अध्ययन के लिए कई उपकरणों, साधनों तथा पर्याप्त समय की आवश्यकता पड़ती है। इसी कारण से विदेशी विद्यार्थियों के हिंदी लेखन में मिलने वाली अशुद्धियों को अध्ययन विषय बनाया गया है।

(ख) विदेशी विद्यार्थी म. गां. अं. हिं. वि. वि.- वर्धा में लघु अवधि के पाठ्यक्रमों में बराबर आते रहते हैं अत: इसी परिसर में सूचक उपलब्ध होने की सुविधा थी।

(ग) कक्षा में लिखित सामग्री, गृह कार्य के अलावा उनसे छात्रावास में मिलकर किसी भी विषय पर स्वतंत्र लेखन करवाया जा सकता था।

(घ) सूचक एक निश्चित सीमा तथा संख्या में ही उपलब्ध थे तथा उन्हीं से सामग्री प्राप्त करने की विवशता थी।

0.4 शोध प्रविधि सूचक

सर्वप्रथम इस शोध कार्य के लिये जिन विद्यार्थियों को सामग्री संकलन के लिये चुना गया है वे समय-समय पर लघु अवधि के कार्यक्रमों में हिंदी भाषा, संस्कृति, इंडोलॉजी तथा साहित्य पढ़ने के लिये महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में आते रहते हैं। इस प्रकार 2013-14 के शैक्षिक समय में इटली, हंगरी, बेल्जियम तथा जर्मनी-4 देशों के विद्यार्थियों का आना हुआ जिनसे बांछित सामग्री प्राप्त की गई।

सामग्री संकलन-

इन विद्यार्थियों तथा उनके शिक्षकों से संपर्क करके उनके कक्षा कार्य तथा गृह कार्य को प्राप्त किया गया। इन सब में अधिकतर नियंत्रित लेखन की सामग्री थी जिनमें स्वाभाविक अशुद्धियाँ नहीं मिलतीं। अत: शोधार्थी ने छात्रावास जाकर उनसे व्यक्तिगत संपर्क करके यात्रा, त्योहार संबंधी विषय देकर इन विद्यार्थियों को स्वतंत्र लेखन के लिये प्रेरित किया। इन सभी लिखित सामग्री को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

प्रविधि-

इस शोध कार्य के लिए बेल्जियम, इटली, हंगरी तथा जर्मनी के लगभग 20 विद्यार्थियों से उनकी लिखित सामग्री संकलित की गई। यह सामग्री उनके कक्षा कार्य तथा गृह कार्य के अलावा उनसे सामान्य विषयों पर लिखवाकर प्राप्त की गई। चूँकि अलग-अलग देशों के विद्यार्थियों की संख्या कम-कम थी तथा सौभाग्य से ये सभी एक ही भाषा परिवार के थे अत: इनसे प्राप्त सामग्री देशवार अलग न करके एक साथ ही रखी गई। तथा उनको एक इकाई के रूप में मानकर अध्ययन किया गया है।

प्रथम स्तर पर कक्षा कार्य तथा गृह कार्य के लेखन की अशुद्धियाँ सम्बद्ध शिक्षकों द्वारा चिह्नित की गई थीं। शोधार्थी द्वारा उनसे संकलित सामग्री की अशुद्धियों का चिह्नकन शोधार्थी द्वारा किया गया।

द्वितीय स्तर पर वर्तनी की अशुद्धियों वाले लगभग 350 शब्दों तथा व्याकरणिक अशुद्धियों वाले लगभग 80 वाक्यों को अलग करके इन अशुद्धियों का स्वरों, व्यंजनों और व्याकरण के आधार पर स्थूल वर्गीकरण किया गया। व्याकरण संबंधी जो अशुद्धियाँ वाक्य स्तरीय थीं उन्हें वाक्यों के साथ ससंदर्भ रखा गया।

तृतीय स्तर पर इन अशुद्धियों का वर्गीकरण उनकी प्रकृति के अनुसार अर्थात स्वर में दीर्घीकरण, ह्रस्वीकरण लोप आदि तथा व्यंजनों में महाप्राणीकरण, घोषीकरण आदि तथा व्याकरणिक अशुद्धियों का लिंग, वचन, काल आदि प्रभेदों के अंतर्गत किया गया।

चतुर्थ स्तर पर इन अशुद्धियों का उनके होने के कारणों की तथा निवारण की दृष्टि से अध्ययन किया गया है।

0.5 साहित्य पुनरावलोकन

विदेशी विद्यार्थियों के लिये हिंदी-शिक्षण, उनके लिए पाठ्य सामग्री निर्माण तथा इस संबंध में शोध संबंधी कार्य केंद्रीय हिंदी संस्थान,आगरा द्वारा किया जा रहा है। वहाँ अहिंदी भाषियों तथा विदेशियों की उच्चारण तथा लेखन संबंधी अशुद्धियों पर परियोजना कार्य कराए गये हैं, जो इस प्रकार से हैं "मराठी भाषी छात्रों के हिंदी लेखन का विश्लेषणात्मक अध्ययन- 1969-70", "उरिया भाषियों की हिंदी में होने वाली त्रुटियों का विश्लेषण-2000-2001" इसके अलावा जे.एन.यू., दिल्ली; काशी हिंदू वि.वि. वाराणसी; अंग्रेजी तथा विदेशी भाषा संस्थान, हैदराबाद; पुणे, मुंबई आदि स्थानों पर भी विदेशियों के लिये भाषा शिक्षण का कार्य किया जाता है लेकिन अशुद्धियों आदि को लेकर वहाँ कार्य होते हैं इसकी कोई सूचना प्राप्त नहीं हो सकी।